आर्योदय

ARYODAYE

Read Aryodaye on line -- www.aryasabhamauritius.mu

Aryodaye No. 310 ARYA SABHA MAURITIUS *15th June to 27th June 2015*

LET US LOOK AT EVERYONE WITH A FRIENDLY EYE

- VEDA

ओ३म् अनेजदेकं मनसो जवीयो नैनद्देवाऽआप्नुवन् पूर्वमर्शत् ।
तद्धावतोऽन्यानत्येति तिष्ठत्तस्मिन्नपो मातरिश्वा दधाति ।।

यजुर्वेद ४०/४

Om! Anejadekam manaso javeeyo nainadhyevaa aapanuvan poorvamarshat
Tadhaavato nyaanateyti tishthat tasminnapo maatarishvaa dadhaati.

Yajurveda 40/4

Glossaire/ Shabdartha

Anejat – Dieu, de par son omniprésence, est statique. Il n'a pas à se déplacer ou à se mouvoir dans l'univers, pour constater ou être au courant de tout ce qui s'y passe et il est toujours imperturbable, c'est-à-dire, rien ne le trouble, ne le confond ou ne l'émeut. Il est impassible, inébranlable et intrépide dans n'importe quelle situation.

Ekam – Il n'y a qu'un seul Dieu, unique dans son genre. Il est le détenteur de toute la richesse matérielle et spirituelle, et de toute la connaissance (le savoir) du monde. Il est tout-puissant et invincible, et il anéantit (détruit) tous ses ennemis. Personne n'est supérieur ou égal à lui. Il est au-dessus de tout. Il est le Maître Suprême de l'univers.

Manasaha javeeyaha – Il est plus rapide que la lumière, l'éclair, et l'esprit ou la pensée de l'homme.

Enat – Dieu / le seigneur

Devaaha - Notre esprit / nos sens (इन्द्रियाँ)

(a) Nos cinq sens ou principes de sensation :
La vue - les yeux, **L'ouie** - les oreilles, **le gout** - le palais,
L'odorat – le nez, **le toucher ou la sensation** : l'épiderme

(b) Nos cinq sens physiques ou cinq sens d'actions.
La langue – (parler), **les mains, les pieds, les organes génitaux** et **l'organe d'excrétion**

Na aapnuvana - Nos sens et notre esprit ne peuvent jamais devancer le Seigneur.

Poorvam arshat - Car il se trouve déjà sur place à n'importe quelle partie du monde ou de l'univers de par son omniprésence.

Tat tishtat - par sa stabilité

Dhaavataha anyaan - tous ceux qui se lancent dans une course pour atteindre un but ou une destination quelconque.

Ati eti - Le seigneur les déroute/ les surclasse,

Maatarishvaa - L'âme agit et entreprend toutes ses actions (karmas) librement tout comme le vent dans l'espace.

Tasmin aapaha - accomplit tous ses devoirs

Dadhaati - Dans ce monde sous la bienveillance, la discipline et la protection du seigneur.

cont. on pg 2

N. Ghoorah

Satyārthaprakāsh

Dr Oudaye Narain Gangoo, O.S.K.,Arya Ratna – President Arya Sabha

The 'Satyārthaprakāsh' or the 'Light of Truth' is the 'Magnum Opus' of Swāmī Dayānanda Saraswati, founder of the Ārya Samāj. The book was originally written in 1874 to be further revised in 1877 at Udaipur by Swāmījī himself. Since then millions of copies have seen the light of day.

The 'Satyārthaprakāsh' is considered as a guide to the mission of the Ārya Samāj. Swāmī Satya Prakāsh, one of the greatest exponents of the Vedas, has rightly said that it embodies the teaching of Swāmī Dayānanda Saraswati on all aspects of life -- religious, social, educational, political and moral. It also sheds light on the way of life as propounded in the Vedas and Vedic Culture.

Swāmījī wrote this book with a view to teaching his readers how to enhance their happiness. To achieve this state, he advises them to follow the path of truth.

Translation works of the 'Satyārthaprakāsh' are available in Sanskrit, German, French, English, Chinese, Burmese, Gujarati, Marathi, Urdu, Sindhi, Orya, Tamil, Telugu and Kannada among others.

The 'Satyārthaprakāsh' reached our shores way back in 1897. In this context, the Arya Sabha had decreed the years 1997-98 as the centenary years of the 'Satyārthaprakāsh' in Mauritius.

The 'Satyārthaprakāsh' consists of fourteen chapters. The first ten chapter summerised by the late Soogrim Bissoondoyal read as follows :

Chapter I : 'OM' is the best name of God, Who has countless other names. His names are without number because His nature and attributes are infinite.

Chapter II : to become a good scholar one must have three excellent guides viz. father, mother and preceptor. Blessed is the family; most fortunate is the child whose parents are godly and learned. Even towards servants their behaviour must be irreproachable. Do not trust the person who says : "I am Hanuman." He was a historical person…. He was a brave and learned man, well read in the Vedas. He was commander-in-chief of Rama's forces.

Once a person has committed theft or spoken untruth in your presence you can never respect him, salute him and offer the best seat possible to him.

A hypocrite or a man of low character must never be trusted, children should obey their parents and tutors in good things and not those that are open to blame.

'Eat a little short of your appetite and abstain from animal diet and spirituous liquors.' (Manu)

Chapter III : The highest duty of the parents is to educate their children. Boys' schools that have male teachers must be about a distance of three miles from girls schools. School children should say their prayer (sandhyā). Their true religion is to accept truth and reject falsehood. The scheme of studies : Grammar, the laws of Manu, Valmiki's Ramayana, Vidurniti, selections from Mahābhārata and the four Vedas. The Vedas alone are held to be "Divine in Origin". *cont. on pg 2*

सम्पादकीय

राष्ट्र का एक नया इतिहास

आर्यसमाज ने मॉरीशस में नारी के उत्थान के लिए एक अद्‌भुत कार्य किया है, जिसकी सराहना केवल हिन्दू समाज ही नहीं, बल्कि अन्य जातियाँ भी करती हैं। उसके अद्वितीय आंदोलन से यहाँ नारियों की मान-मर्यादा अधिक बढ़ने लगी। जो नारी हिन्दू समाज में घर की दासी मानी जाती थी, उसका उद्धार होने लगा। शिक्षा का द्वार उसके लिए खुल गया, उसके लिए प्रगति का पथ प्रकाशित होने लगा और धीरे-धीरे देश की महिलाएँ पुरुषों के साथ उन्नति करने लगीं।

आर्यसमाज एक ऐसी सुधारवादी संस्था है, जिसने आवाज़ उठायी कि हमारे देश की सभी नारियाँ अपना शारीरिक, बौद्धिक और आत्मिक विकास पुरुषों के बराबर कर सकती है। आर्यसमाज के प्रचार कार्यों से हिन्दू महिलाओं का उत्थान होने लगा और अन्य नारियाँ भी उनसे प्रभावित होती गईं। जिन स्त्रियों की जीवन-सीमा घर की चार-दीवारी तक ही सीमित थी, आज वे ही अपनी शक्ति, योग्यता, बुद्धिमता तथा सुशीलता का चमत्कार दिखाकर हमारे देश में सम्मानित हैं।

नारी-शिक्षा की जो ज्योति आर्यसमाज ने प्रज्वलित की थी, आज उसी ज्ञान-ज्योति से प्रकाशित होकर हमारी महिलाएँ ऊँचे-ऊँचे पदों को सम्भाल रही हैं और उनसे प्रभावित होकर हर एक क्षेत्र में विकसित हो रही हैं। हम कह सकते हैं कि हमारी कर्मशील नारियों के पूरे योगदान से मॉरीशस में इतना भारी परिवर्तन आया है।

आज हमारे लिए बड़े ही गर्व की बात है कि हमारी आधुनिक सरकार ने सुश्री मायादेवी हनुमानजी जी की विद्वता और योग्यता परख कर उन्हें विधान सभा का स्पीकर-पद प्रदान किया है। इतना ही नहीं अभी हाल में हमारी सरकार ने मिसज़ अमीना गरीब फाकीम को छठा राष्ट्रपति पद सौंप कर एक नया इतिहास रचा है । हमारी सरकार के खास निर्णय से सभी नागरिक प्रसन्न हैं ।

विश्व के जिन विशाल और समृद्धशाली देशों मे नारियों के उत्थान और शिक्षण व्यवस्था में कोई रोक-थाम नहीं, वहाँ के कई समृद्धशाली देशों में अभी तक कोई भी नारी राष्ट्रपति पद पर विराजित नहीं हुई है, इसका मतलब यह है कि मॉरीशस सरकार नारियों के नाम-सम्मान तथा अधिकार में पूरा ध्यान देती है ।

हमें पूरा विश्वास है कि जिन दो भाग्यशालिनी महिलाओं को इन ऊँचे पदों पर नियुक्त किया गया है, वे अपने पदों को बखूबी सम्भालेंगी और देश के उत्थान में अपना पूरा योगदान देकर नारी जाति की शान हिन्द महासागर में बढ़ायेंगी ।

मॉरीशसीय जनता को पूर्णाशा है कि उनकी कार्यकुशलता से प्रभावित होकर हमारे देश की अन्य महिलाएँ अति प्रभावित होंगी और वे पुरुषों के साथ-साथ बराबर सम्मानित होती रहेंगी। हमारी सरकार ने नारियों के प्रति जो सम्मान दिखाया है, उसका परिणाम अवश्य ही प्रशंसनीय होगा, क्योंकि कहा गया है कि जहाँ नारियों का सम्मान होता है, वहाँ देवताओं का निवास होता है ।

बालचन्द तानाकूर

सामाजिक गतिविधियाँ

सत्यदेव प्रीतम, सी.एस.के, आर्य रत्न - उपप्रधान आर्य सभा मॉरीशस

संगोष्ठी आर्य भवन में

शनिवार दिनांक १३ जून २०१५ को आर्य सभा मोरिशस ने सत्यार्थप्रकाश मास के तहत सत्यार्थप्रकाश पर एक संगोष्ठी का आयोजन किया था। एक यज्ञ द्वारा सपहर १.०० बजे कार्यक्रम का आरम्भ हुआ, जिसको आर्य सभा को पुरोहित-पुरोहिताओं ने सम्पन्न किया। कार्यक्रम के दौरान तरूण संगीतकार एवं भजन गायक श्री हिमेश की मंडली ने मौके के भजन गाये।

संदेश देने हेतु चार विद्वानों को आमंत्रित किया गया था और हरेक को कालजयी ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश का एक-एक सम्मुलास निर्धारित किया गया था।

१. आर्य सभा के प्रधान डा० उदयनारायण जी गंगू को समुल्लास एक और दो, आचार्य उमा को समुल्लास तीन, सभा उपप्रधान श्री सत्यदेव प्रीतम को समुल्लास पाँच और अन्त में पं० यश्वन्तलाल चुड़ामणि को समुल्लास चार। सभी ने अपने अपने समुल्लास के विषयों को वैज्ञानिक ढंग से प्रस्तुत किया जिसे प्रबुद्ध श्रोताओं ने ध्यान पूर्वक सुना।

कार्यक्रम की विशेषता यह थी कि प्रत्येक वक्ता के व्याख्यान के बाद उस विषय पर प्रश्न करने का समय दिया गया था। बारी बारी से व्याख्यान दाताओं ने उत्तर देकर श्रोताओं की जिज्ञासा को शान्त किया। श्रोताओं के बीच उपस्थित थे आर्य सभा के अन्तरंग सदस्यों के बीच न्याय मूर्ति श्री रामप्रसाद प्रोआग जी और सभा के मान्य प्रधान डा० रुद्रेसन निऊर।

समारोह का प्रधानत्व वेद प्रचार समिति के प्रधान मित्रवर बालचन्द तानाकूर ने किया और आरम्भ से अंत तक सभा मंत्री हरिदेव रामधनी ने कार्य को प्रस्तुत किया। अन्त में शान्तिपाठ के बाद सभी को जलपान से सत्कार किया गया।

मार लाशो में सत्यार्थप्रकाश पर कार्यक्रम

जब से जून मास को सत्यार्थप्रकाश मास घोषित किया गया है तब से मार लाशो आर्य समाज मंदिर में सत्यार्थप्रकाश पर प्रवचन वा भाषण का आयोजन किया जाता रहा है ।

इस वर्ष पिछले सप्ताह के १२, १३ और १४ जून को तीन दिनों के कार्यक्रम का आयोजन किया गया था।

प्रथम दिन शुक्रवार १३ जून २०१५ को शाम के ४.०० बजे प्रान्त के पंडित-पंडिताओं द्वारा यज्ञ हुआ तत्पश्चात्, भजन-कीर्तन और सत्यार्थप्रकाश के प्रथम समुल्लास पर पंडित शिवशंकर रामखेलावन द्वारा प्रवचन हुआ। पंडित जी ने बताया किस प्रयोजन से महर्षि ने भगवान के १०८ नामों की व्याख्या की है। सन्ध्या के बाद सभी उपस्थित लोगों को भोजन से सत्कार किया गया।

शनिवार ता० १३ को ठीक चार बजे तीन पुरोहिताओं द्वारा यज्ञ सम्पन्न किया गया और महिलाओं ने ही तत्विषयक भजन गाये उसके बाद आर्य सभा के उपप्रधान श्री सत्यदेव प्रीतम ने दूसरे समुल्लास पर प्रकाश डाला। शुरू-शुरू में तो मंदिर उतना भरा नहीं था पर उपप्रधान के व्याख्यान के दौरान हॉल खचाखच भर गया। स्वामी जी ने किस उद्देश्य से सत्यार्थप्रकाश के दूसरे समुल्लास का प्रणयन किया था। भारत वर्ष की तत्कालीन दशा क्या थी उस पर विशद रूप से खुलासा देते हुए बताया क्यों शिक्षा विषय लिया था। शिक्षा ही प्रगति का मूल है।

रविवार को एक विशेष कार्यक्रम रखा गया था। मुख्य वक्ता सभा प्रधान डा० उदयनारायण जी गंगू थे। उनके लिए तीसरा समुल्लास निर्धारित था। उन्होंने बताया कि महिलाओं को बहुत ऊँचा स्थान दिया गया था। जब से उनको सम्मान देना बन्द हुआ तब से समाज का पतन आरम्भ हुआ। स्वामी जी ने माँ को बहुत सम्मान दिया क्योंकि बच्चों का गुरु वही है।

अन्त में युवकों द्वारा एक विशेष कार्यक्रम पेश किया गया जिसके दौरान विकास नाकछेदी को सम्मानित किया गया।

OM

Satyarth Prakash Jayanti

PROGRAMME FOR RIVIERE DU REMPART A.Z.P. - June 2015

A.S/A.M.S	DAY	DATE	TIME	Pandits & Panditas
Pavillon Cap Malheureux AS85	Sat	20	4.00 p.m	Pt. D. Gopal
L'Esperance Piton AS 006	Sun	21	8.00 a.m	Pt.R. Beekharry
Petit Raffray AS 035/AMS 459	Sun	21	6.00 a.m	Pta. S. Baurun
P. des Roches AS 117/AMS 301	Sun	21	8.00 a.m	Pt. C. Beeharry
R. Noires AS 075	Sun	21	9.30 a.m	Pt. C. Beeharry
P. Village–Goodlands AMS 198	Sun	21	8.30 a.m	Pt. S. Noyan
Kings Road Goodlands AS 200	Sun	21	4.30 p.m	Pt. D. Gopal
R. Noires AS 107/AMS 345	Fri	26	3.30 p.m	Pta. Greedar
A.M. Goodlands AS 022/AMS 270	Fri	26	5.00 p.m	Pt. D. Gopal
B. Rouge Goodlands AS 126	Fri	26	5.00 p.m	Pt. R. Madhoo
B.V. Maurel AS 051/AMS 463	Fri.	26	5.00 p.m	Pt. C. Beeharry
L'Esperance Piton AS 006	Sun.	28	8.00 a.m	Pt. R. Beeharry
P. Raffray AS 035/AMS 459	Sun	28	6.00 a.m	Pta. S. Baurun
A.M. Goodlands AS 146	Sun	28	8.00 a.m	Pt. R. Madhoo
A.R. Goodlands AS 160	Sun	28	9.30 a.m	Pt. R. Madhoo
M.J. Goodlands AS 36	Sun	28	5.00 p.m	Pt. R. Madhoo
M. Grand Gaube AS 316	Sun	28	7.00 p.m	Pt. R. Madhoo
T. Goodlands AS 160	Wed.	03,10,17, 24,	5.00 p.m	Pta. S. Baurun
P.V. Goodlands AS 385	Sun.	14	8.30 a.m	Pta. S. Baurun
Amaury B.V. Maurel AS 153 /AMS 257	Sun	14	4.00 p.m	

OM

Satyarth Prakash Jayanti

PROGRAMME FOR PAMPLEMOUSSES A.Z.P. - June 2015

A.S / A.M.S	DAY	DATE	TIME	VENUE / RESIDENCE
1. Morc. St. Andre Hamlet 197/129	Fri.	05	6.00 p.m	Shri Bholah Residence
2. T. Boutiques Triolet A.S 60	Sun	07,14, 21, 28	8.30 a.m	Arya Mandir, Triolet,
3. 9th Mile A.M /A.M.S 32/304	Tues.	09	12.30p.m	Arya Mandir
4. Gde. Pte aux Piments 246 /265	Fri.	12	5.30 p.m.	Satish Prabhu Residence
5. Notre Dame Mt Longue A.S 278	Fri.	12	5.00 p.m	Arya Mandir
6. Gowshal- Plaine des Papayes 50/267	Sun.	14	7.00 a.m,	Arya Mandir
7. Creve Coeur Mt Longue 182 / 396	Sun.	14	3.00 p.m	Arya Mandir
8. Morc. St Andre A.S 7 /136	Sat.	20	4.00 p.m.	Arya Mandir
9. Fond Du Sac AS / A.M.S 8 /154	Sun.	21	9.00 a.m	Arya Mandir
10. Bois Mangues AS/AMS 26/12	Thurs.	25	5.30 p.m	Arya Mandir
11. Morcellement Hamlet (St. Andre)129	Thurs.	18	5.30 p.m	Residence
12.Mongoût AS 05	Sun	21	7.00 a.m	Mongoût AryaMandir
13. Ilot A.S 20	Tues.	23	3.00 p.m	Ilot Arya Mandir
14. Bois Rouge Sat. 20			3.00 p.m.	Bois Rouge Arya Mandir

Satyārthaprakāsh

cont. from pg 1

Chapter IV : Get a student enter married life after he has studied the four Vedas, three, two or only one of the four. The minimum marriageable age is 25 in the case of a Brahmachāri and 16 in that of a Brahmachārini. Even a married man can be called a Brahmachāri if he controls his senses. The order of the householder is the most excellent order.

Chapter V : After the order of Householder, comes the third order, that of the forest-dweller, whose duty it is to acquire knowledge and live far away from cities.

The fourth stage is reached when someone becomes a 'sannyāsi'. Only learned persons have the privilege of becoming sannyāsis.

A true sannyāsi is indifferent to pleasure and pain. He wears the ochre coloured garment.

A king is respected in his own country, whilst a man of learning is respected everywhere.

Chapter VI : Let there be for the benefit of rulers and the ruled three assemblies : Religious, Legislative and Educational. Members of the Religious assembly should be most devout, of the Legislative assembly most praiseworthy, of Educational assembly most learned. The law alone is the real king. It cannot be administered by an ignorant and unjust man. Let no man abide by the decision of myriads of ignorant men. Higher fines should be inflicted on the learned and the rich than on the ignorant and the poor. That "the king can do no wrong" is anti Vedic.

Chapter VII : Whatsoever or whosoever possesses useful and brilliant qualities is a Devata. Prayer creates humility and engenders courage. God never answers a prayer such as "Destroy my enemies." In the beginning God revealed the four Vedas. One receives knowledge from another; Four among the first human beings received it from God.

The Vedas do not contain the biography of any person. The ideas expressed in the Vedas are eternal and not the books which are made of paper and ink.

Chapter VIII : Matter or 'Prakriti existed before creation. It will exist – although in a subtle form – after dissolution. Cause must precede effect. Even God cannot change the natural properties of things, as heart of the fire. Can he make another God, Himself die, become inert? No.

You will reap what you have sown. The world did not come into being by itself but was made by God. Blessed are those who studiously endeavour to understand the principles of all sciences and having mastered them, reach others honestly.

It is not a simple pair but thousands of persons were born in the beginning. Say what you will, the indigenous nature rules is by far the best.

Chapter IX : One who is sunk in sin and ignorance is in bondage. The soul remains finite or limited in knowledge though pure in nature. Be friends to those who are in pain and distress; love those who are good and virtuous, but neither hate nor love the wicked. We are born in order to reap what we have sown.

The soul goes into the body of a lower animal (or plant) after death or into that of a human being.

Chapter X : "Let a wise man never speak unless spoken to, nor answer a question when unjustly and hypocritically asked. Among hypocrites let him remain as if he were dumb, but to the honest truth seeker let him preach though even unasked."

The Shastras have declared an ignorant man to be like a child and a learned man like unto a father. Let a man always move in the society of men who are learned, truthful, pious and have public good at heart.

This in truth constitutes good conduct. Duryodhan was wicked. He was the enemy of his country.

One cow in one generation benefits more than four lakhs of people. She should be protected.

Let wise men promote the happiness of all.

Om! Anejadekam manaso javeeyo nainadhyevaa aapanuvan poorvamarshat
Tadhaavato nyaanateyti tishthat tasminnapo maatarishvaa dadhaati.

Yajurveda 40/4

cont. from pg 1

Interprétation / Anushilan

Ce verset (mantra) provient du quarantième chapitre du Yajur Veda, qui est aussi appelé 'Ishopanishad'.

Dans ce mantra il y a l'emphase sur les attributs de Dieu en relation avec ceux de l'homme.

Il n'y a qu'un seul Dieu, unique dans son genre. Dans le Rig Veda il y a plusieurs versets pour soutenir cette vérité et en voici un: **'Ekam satya vipraa bahudhā vadanti'.** Cela veut dire qu'il n'y a qu'un seul Dieu, mais les sages lui ont attribué plusieurs noms ayant trait à ses qualités et ses différentes fonctions qu'il assume pour maintenir la discipline, le bon fonctionnement, la stabilité, l'harmonie et la paix dans l'univers.

C'est ainsi qu'il est connu par plusieurs noms et en voici quelques-uns :

Indra - puisqu'il est tout-puissant et parfait.

Mitra - puisqu'il est l'ami de tout le monde. Il nous aime tous et il est digne d'être aimé.

Varuna - puisqu'il est pur, saint, juste et génial, tous les sages, les savants, les génies, les ascètes et les fidèles en quête de la vérité et du salut, ont recours à lui.

Yama - puisqu'il est le seul à gérer l'univers et qu'il en est le Juge Suprême qui dispense la justice à tout le monde.

Maatarishvaa - puisqu'il est puissant comme le vent

Agni - puisqu'il possède toute la connaissance ou le savoir du monde, qu'il est omniscient, digne d'être adoré, d'être connu, d'être recherché et d'être réalisé ou d'être atteint.

Antaryaami - puisqu'il est pénétrant tout, il est présent dans tout l'univers, dans notre âme, dans notre cœur, dans notre esprit et dans notre pensée.

Il est au courant de nos pensées, de toutes nos actions et de tous nos agissements.

Dieu, étant présent dans tout l'univers, est stable et immobile. Il n'a pas besoin de se déplacer pour voir ou pour se rendre compte de tout ce qui s'y passe. En maintenant une discipline parfaite, il soutient, guide et protège toutes les créatures ici-bas.

Le seigneur est plus rapide que la lumière, l'éclair, notre esprit ou notre pensée. Tout en restant immobile il nous devance tous, de par son omniprésence dans l'univers. Il est toujours présent en avance au lieu, aux choses ou aux créatures que nous envisageons dans notre pensée.

On ne peut jamais le voir de nos yeux physiques ou par d'autres sens, car Dieu est éternel et nos sens sont éphémères (de courte durée, temporaires, périssables). C'est par le truchement de notre âme qui est éternelle lorsqu'elle est purifiée, par la pratique du yoga que l'on peut voir Dieu. Ce n'est que par l'éternelle (notre âme purifiée) que l'on peut voir l'éternel (Dieu).

Ce sont seuls les sages, les ascètes, les prophètes, les érudits et les savants, qui purifient leurs âmes par la pratique du yoga, peuvent apercevoir Dieu dans toute sa splendeur pendant leur méditation.

Mahārishi Swāmi Dayānanda Saraswati dans son chef-d'œuvre intitulé 'Satyārthaprakāsh' nous livre ses impressions. Il partage son expérience vécue au cours de ses méditations par la pratique du yoga lorsqu'il atteignait le stage suprême ('Samadhi' en Hindi) et pouvait contempler Dieu en son âme et s'entretenir avec lui.

Voici en quelques mots les impressions du Grand Swāmi Dayānanda lorsqu'il était en communion parfaite avec Dieu.

'Aucune langue ne peut exprimer cette béatitude qui émane de la communion avec l'Esprit Suprême dans l'âme d'un homme dont les impuretés sont effacées par la pratique du yoga, dont l'esprit détaché du monde extérieur, est centré en l'Esprit Suprême; car cette béatitude est ressentie par l'âme humaine seulement dans son fort intérieur .'

OM

ARYA SABHA MAURITIUS

NEPAL SOLIDARITY FUND

cont. from last issue

S/N	Name	Amount Received Rs
	Balance b/f	*354,980.00*
1.	Gausal, Minen, Rajend	120
2.	M.Oodhan	100
3.	I.Oodhan	100
4.	A.Oodhan,S.Oodhan, Bhuvan	130
5.	Diya & Nandini Jhupsee	100
6.	S. Bhoodoo, V. Boojhawon,D. Phoulchand	150
7.	D. Phoolchund, Rade/Vinod Parbotee	150
8.	Devika Rani Pauhaloo	100
9.	Nand Ramooah	200
10.	Ranvir Paliyadu, Shekar Bhurosy	150
11.	M. Oberam, Bhugawoo S. R.	150
12.	S.Jhupsee	200
13.	Heemawath Jhupsee	200
14.	Chumun Razputh	100
15.	Vikram Ramtohul	100
16.	Veena Ramtohul	100
17.	Heera Gangia, Premila Gokoolsing	125
18.	Moirt Kris	500
19.	Mantee Govindin	100
20.	Mussai, Bhikari	100
21.	Govind, Marie Laville	100
22.	Geeta Seewdeen, Esso	100
23.	Ballaram, Jooty	100
24.	F.Raghoo	100
25.	Ramawatar, Purgass	100
26.	Jawaheer, Mr & Mrs Cheetamun R.	150
27.	Marie Claire	100
28.	Radha Mohabeer, Gaoneadry	100
29.	Babooram, R.Jooty, V.Jooty	150
30.	K. Ahlad, K. Beedassy, Std IV B. Ombre	122
31.	Narayya Sandyana, Chitra Dabeedial-Suddul (Std III), Ayoushi Paddia-Ramkissoon, Penj	100
32.	M.Marday, Rosemonde Allybocus, Lolljeen P.K	110
33.	D.Goramsing, V.Pothanah, D.Annea, M.kissoon, S.Moosafur, S.Pydeegadoo	150
34.	S.Mootegoo, S.Burggee, A.Rama	125
35.	A.Talak, R.Mahadeo, Ansh Pandeo, A.M Abraham	115
36.	Rina Goraya, Yistabhai Pandoo, M.Clair	145
37.	Dou Dou Miaw, P.Lutchmoder, Suli & Co	100
38.	C.Figaro, H.Puttarao	100
39.	Neil Yu, Chitra Boodhoo, M. Goomick	100
40.	V. Mineur, D. Charlotte, M. Lefronter, J.P. Cousinery, K. Souci, Reema C, J. Heeroo-Koo, G. Rama, Rajini, Vilashni, P. Thatheah	150
41.	Ujala Jeebaun & Others	1054
42.	Ramburhose Dhanwantee	100
43.	Lutchmun Deoduth	100
44.	A.Khooseeal	100
45.	Tarachand Torul	1000
46.	Indira Bhugon, Joolamee, M.Aullur	150
47.	Jean Francois Thiredou	200
48.	A. Elaheebacus, Suresh C.Veerama	525
49.	Ashkaa Khirodhur, Shreya Rakhal	150
50.	Rakhal Puran	100
51.	Rakhal Nirav	100
52.	Rakhal	300
53.	Ramnath Sacoontala	100
54.	Yudish Nobine, Ansuya Lokye	100
55.	Vicky Payen, Banarsee, Malinee Caniah	175
56.	Papah Canniah	100
57.	Dilshad Goolaraully, H.Burneuf	175
58.	Saumtally S.	200
59.	Rakhal Chaya	200
60.	Urmila Ghoorbin, Audar Mala	150
61.	Haronia Sanjeev	100
62.	A. Dulloo, R. Dulloo,L. Khaidoo	100
63.	Preety Ghoorah	100
64.	Germaine LaVioletta	100
65.	Saumtally F	500
66.	Chatan Samuel	100
67.	Khadoo Aadarsh, Reshma Odoye	100
68.	S. Napaul, S. Armoogum, M. Rubee, L. Nagayah	125
69.	Perrian Nilama, Pollna Ramillo	125
70.	Y.Ritesh Dulloo, Tania & Akilesh Reedoy, Saurtee Sooreka, Maya Dowlut	175
71.	Indiren Vya Pooy	100
72.	Poonam Hurdoyal	100
73.	Kishan Seepaul	100
74.	Nisha Kalleachun, B.Rakhal	350
75.	Anand Dawlut	100
76.	Kalyanee Dawlut, Aumesh Dawlut	100
77.	N. Dawlut, A. Seebaluck, Veishakee	100
78.	Sandeea Lala, Sobha Parbhu	100
79.	Ouma La Rose	500
80.	Vinay La Rose	500
81.	Diya Kistomohun	100
82.	Balmick Parshu	100
83.	Madhvi Gungah, Premika Tengory	100
84.	Lala Amrit	100
85.	Haulkoree Preetam, Dowlut Rohit	125
86.	Preeti Dowlut	100
87.	Leena Dowlut	100
88.	Rita Tengory	100
89.	Drishtee Kheddoo	100
90.	S. Rambooram, Chenaz, Azry, Aartee	100
91.	A. Lukhun, Shyam, R. Tengory	100
92.	Chandramokee, Yeshna, C. Tengory, V. Tengory, R. Tengory	125
93.	Pricilla,Kailash, Bhevishta, Krish	100
94.	Vicky, Premika,Priyanka, Sachin, Nitin, Jerry, Roy	175
95.	Devmunee Motee	100
96.	Damayantee Rumooa	200
97.	Deonarain Binda	200
98.	Priambadah Jeebaun	500
99.	Sanyogeeta Patni	100
100.	Yeswantee Jeebaun	100
101.	Rumbha Jeebaun	200
102.	S. Burtun, S. Gookhool	100
103.	Anita Prabhoodayal	200
104.	Kumaree Gookhool, Sariba Nunkoo	100
105.	Sosyl Boodhun, Yessen Ramasawmy	100
106.	Sacoun Gokhool	100
107.	Adarsha Panchoo	100
108.	R. Mohabelly, D. Podano, A. Gunputh	170
109.	Rajen Murden	100
110.	Veena Amrita Urputtee	100
111.	Maheswarnath Shumboo	100
112.	Prema Pooja Shop	100
113.	Mahen Bhaugeerutty	200
114.	Jay Bajjonauth	200
115.	Jaymantee Haton	100
116.	Dharmawtee Govinden	100
117.	Anandee Paddeea	100
118.	Preety Puddeea	100
119.	Oochit Bissoonduth	200
120.	K. Ramphul, G. Ramdhun	250
121.	Shivranee Jeebaun	200
122.	Jotsnah Ramnauth, Ashvin Seetharam, Youdish Sawon, Rasha Peerbox	100
123.	Rajiv, Kevina, Nandita Reedoye, Meveen Appadu	100
124.	T. Ramdhany, R. Narahoo, S. Ramburrun,	
125.	Nivin Suryadev Sunathree	100
126.	K. Mootien, Z. Joomaye,S. Leelachand	100
127.	K. Leelachand, R. Leelachand	100
128.	G.Visam Gangoo	100
129.	Ved Kiran Gangoo	100
130.	Danwante Seetul, Yash Dhanow	125
131.	G. Bhusha, N. Seeruthun	100
132.	Varaine Seeruthun, J. Gangoo	75
133.	Mrs & Mrs Vinod Seetul	1000
134.	Lakshmee Leelachand	100
135.	Amar Ramdhony	100
136.	H. Leelachand, Anusha Bhurtun	100
137.	V. Dookith, Ramdhony, Dhunnoo, Beefeya	100
138.	Boobun, Chikun, Manoruth, Gooljar	100
139.	Roger, Sampath, Alibocus, Soondur	100
140.	Shreyas Gangoo	100
141.	Roshan Taurah	100
142.	Rishi Leechoo, Seeduth Soochit	100
143.	Seeda Soochit	100
144.	A. Boodhun, Y. Ramessur	150
145.	Yohan Ramessur	100
146.	Devesh Seetul	100
147.	Kamla Seetul	100
148.	Satis Seetul	200
149.	Om Gangoo, Raj Nowrung	100
150.	L. Seeruttun, G. Leechoo	150
151.	Sheemati Sreekeesoon	100
152.	Ramchandar Teeluck	200
153.	Simla Soochit	300
154.	Dharamveer Daby	200
155.	K. Gangoo, S. Seetul, A. Sayjadah	225
156.	Seedarshan Podano	100
157.	Manti Teeluck	100
158.	Diya Teeluck Seeruttun	300
159.	Rakesh Shreekeesoon	100
160.	Aatish Seeruttun	100
161.	Dookhit Parivaar	200
162.	Kemdutt Ramchurn	200
163.	Keswarlall Manic	500
164.	Sabite Bassantoo	100
165.	Kisnawtee Torowa, Shobha	150
166.	Mohanlall Manic	100
167.	Malawtee Chokoree	100
168.	Roni Bheekarry	100
169.	Vijay Lutchmee Doolar, Sanjay	125
170.	Aarti Banyua & family	200
171.	Sooroojlall Shiv Sharan	400
172.	Geerdhari Kavi	200
173.	Reetaraj Pydegadu	500
174.	Koosmawtee Anthony	100
175.	Devi Aunee	100
176.	Rajesh Aunee	500
177.	Vikash Choytun	200
178.	Parmessur Emrith	100
179.	Jaywantee Ramsurrun	100
180.	R. Chandrah, C. Poorun	150
181.	Chandar Poorun	100
182.	Rajen Appadoo	100
183.	Nundoo	150
184.	Subiraj Ereelana, Manoj Dhallapah, Shiboo Balram, Mukesh Shamy	260
185.	Vellapa Naiken, Beejay, Romnath	115
186.	Gason Murliar, Priya Murliar	100
187.	B. Shiboo, K. Shiboo, P. Shiboo, P. Gian	145
188.	Vikram Ramsamy	100
189.	Bamey Gurudev,Budaru Niraj, L. Rajan	125
190.	Mungroo J, Kevin Joyessur, R. Mungroo	130
191.	K. Boodiya, Chooramun Bhaygon, D. Dhunny	100
192.	K. Fowd, R. Fowd, Gopalen Naika	175
193.	Rajen Baboolall	200
194.	Sauntee Shyama	100
195.	S. Noocadoo, R. Gopal, D.S.Subama, Bassama N	195
196.	P. Jugum, Bassama Chando	125
197.	Pt. Reejhaw	200
198.	Neerunjun S., S. Coonjbahary	150
199.	D. Ramdonee, Narain Sammalia	250
200.	Danwantee Sammalia	100
201.	Satish Harrack	100
202.	Seenarum, Kumane Harrack, Soowamber Doya	135
203.	Sonmatea Choolun	200
204.	Shanti Choolun	100
205.	Sunanan, Swastee Boyjoo	145
206.	Savitree Reejhaw	200
207.	Kisnawtee Toorwa, S.K. Ramdonee	125
208.	Mala Ramdonee	100
209.	Sunil Reejhaw	100
210.	Heemani Reejhaw	100
211.	Premila Reejhaw	100
212.	Mala Sunnnasee & family	400
213.	Vishwani	100
214.	R. Goorah, A. Sunnassee	100
215.	R. Sunussee, S. Sunnussee	100
216.	A. Goorah, I. Dhonow	100
217.	V. Hozeer, S. Dagoobeer	100
218.	Siddharth Sunnassee	100
219.	J. Sunnassee, D. Sunnassee	150
220.	M. Sunnassee, J. Lalbeeharry, A. Rambocus	175
221.	Shoba Piteea	100
222.	A. Dhonow, Soogeeyar Buldhi Lata	225
223.	Yash family	200
224.	Giantee Mohan	100
225.	Dharam Khouseya	100
226.	Parbattee Jharee	100
227.	Devand Burthia	100
228.	I. Burthia, T. Dhonow, Vilasha	150
229.	Sooresh Narain	200
230.	Sonah Ramessur	200
231.	Moonee Currooah	100
232.	Mala Monraz, Abhishek Narain	150
233.	Mookesh Dookhitram	100
234.	Ramesh Dookhitram	200
235.	Vicky Dookhitram	100
236.	Vickesh Dookhitram	100
237.	Soodesh Kheeroo	100
238.	Balwantee Koylan	200
239.	Jugdish Guddah	100
240.	Satish Pauhaloo	100
241.	Lilawtee nand, Junior Pauhaloo	150
242.	Cakehee Bissoo, Nand Pauhaloo	150
243.	Dharmanand Sooklall	100
244.	Kissan Narain	500
245.	Geeta Narain-Ramdin	200
246.	Sonia Narain Pauhaloo	200
247.	Amardeep Narain	200
248.	Indira Narain Bhansing	200
249.	Asha Panchoo, Satyam Sagar	150
250.	Sardhanand Pauhaloo	100
251.	Ravi Ramnaudan	100
252.	Dhanwantee Dookhitram	100
253.	Bindumatee Kheeroo	100
254.	Rekha Nobin	100
255.	Vineeta Nobin, Gawtum Narain	150
256.	Ramesh Ramsaha	100
257.	Dayanand Ramsaha	200
258.	Palbateea Bisnath	100
259.	Roshan Ramessur	100
260.	Syam Puttur	100
261.	Vikash Puttur	100
262.	Meena Currooah	100
263.	K. Currooah, B. Currooah	100
264.	Kumari Munraz	500
265.	Kishor Narain	100
266.	Sachin Narain	100
267.	Indranee Ramsaha	100
268.	Dhandeo Guddah	100
269.	Bharuth Dookitram	100
270.	Soorooj Nobin	200
271.	R. Sohatoo, M. Currooah	150
272.	Luc Jimmy Cassy	100
273.	D.Jeeha	200
274.	Bikhye Hurrydeo	500
275.	Dhurundur Sudesh	100
276.	Abeeluck Deepak	100
277.	Dhurundur Sardanand	200
278.	Dwarka M.	100
279.	Mungur Subhawtee	200
280.	Gokool Navin	200
281.	Bhurosah Deoduth	100
282.	Sumoreea Rajesh	100
283.	Nagessur Deokee	500
284.	Nagessur Vinod	200
285.	Ramgoolam MS	100
286.	Bhurosah Kapil	100
287.	Aubeelackoon Mrs	100
288.	Purmessur S.	75
289.	Camp de Masque Mahila Samaj	500
290.	Seebnauth Prem	100
291.	Gokool Sakoon	200
292.	Gokool Vishal	200
293.	Chuckun Bhoopendranath	1000
294.	Gokool Bisnoodeo	200
295.	Boodhoo Jaywantee	200
296.	Aubeeluck Sanjay	200
297.	Gawtam Gokool	150
298.	Q. Militaire A.S. Ghoorah Naraindra	500
299.	Rajoo Samantee	100
300.	Rajoo Sujata	100
301.	Seewoogobin Rameshwar	100
302.	Rajoo Devanand	100
303.	Bhimam Jairaj	100
304.	Sookun Rishi	400
305.	Bhimam Saraswatee	100
306.	Boodooa Vima	200
307.	Sookun Devika	100
308.	Ghoorah Chimmunlall	500
309.	Mahadeo Babooram	500
310.	Jugbundhee Ramesh	100
311.	Mutty Divesh	100
312.	Ramassami Vegambal	150
313.	Lutchmun Pooja	100
314.	Cooshnea Akshay	150
315.	Narain Roomesh	100
316.	Neerputh Kamal	200
317.	Ramgolum Sahilen	100
318.	Hoolash Viraj	100
319.	Teckmun Rosun	100
320.	Sooroojlall Rosun	100
321.	Sooboopillay Kovilen	100
322.	Teeluck Arvind	100
323.	Unnuth Ranish	100
324.	Lukhmiah Sonia	100
325.	Coushna Vikash	75
326.	Moil Thaisha Naginlall	100
327.	Sawoky Abhishek	100
328.	Gukool Nilmal	150
329.	Pertab Jay	100
330	Jugurnauth S	100
331.	Bhunjun Divyah	100
332.	Djamil Annaruth	150
333.	Veeren Kritish	100
334.	Ramjuttun Margedu	100
335.	Madhour Neeno	175
336.	Sauhamut Parvez	125
337.	Oozageer Tasnini/Babajee Viraj	200
338.	Ragoonunden Arjun	140
339.	Ramphul Vandita	100
340.	Chedambaram Natasha	100
341.	Shruti Lallbeeharry	100
342.	Ghoorah Neha	85
343.	Jokhun Hurduth	200
344.	Jeewooth Prabhakar	500
345.	Jeewooth Prakash	500
346.	Dropnath Raghoonath	100
347.	B.Cheetamun, Moonien Shivasingh	120
348.	S.Cheetamun	100
349.	Siten	100
350.	Giandeo	100
	TOTAL	**Rs 411,491.00**

..... *to be continued*

In the Wake of SATYARTH PRAKASH MONTH / JAYANTI

SATYARTH PRAKASH : An Infinite and Endless Store of Knowledge

Sookraj Bissessur (B.A. Hons)

"Before the multiplicity of religions, there was only one religion for the whole of humanity. All had faith in one only. They sympathized wiht one another in pain and plesure. There was happiness in the whole world. Now the multiplicity of religions has led human beings to much unhapiness and discard. It is the duty of wise men to find means to end it. May God show us the light !" ***Satyarth Prakash-Chapter X***

The followers of Vedic Dharma- celebrate the **SATYARTH PRAKASH MONTH** in June. The Satyarth Prakash is one among the most important books written by Maharishi Dayanand Saraswati. He wrote the book at the suggestion of his friends particularly on the very insistane of Raja Jaikrishnadass. The work started on 12 June 1874 at Varanasi (Benaras). It was completed within three and a half months at Allahabad.

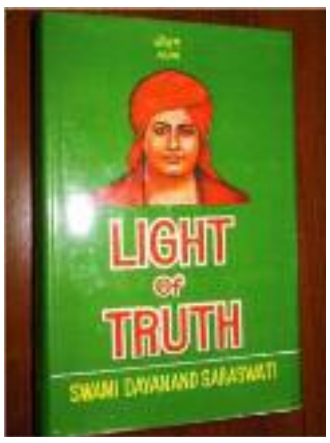

In his introduction - Rishi Dayanand writes:- "My chief aim in writing this book is to unfold truth. I have expounded truth as truth and error as error. The exposition of error in place of truth and of truth in place of error does not constitute the unfolding of truth".

As a reformer of human life and society in all its aspects-Social, Cultural and Spiritual, Mahrshi Dayanad Saraswati stands unique and unparalleled in history. Besides, being the greatest Social Preceptor of the Vedas of modern times, he was also a prominent and prolific writer. He has written dozens of books amongst which the Satyarth Prakash/ Light of Truth is his masterpiece. Critics proclaim it as his **"Magnum Opus"** and qualify it as the Encyclopedia of religions and universal human values.

Members of the Arya Samaj, follow the guidance of Maharshi Dayanand Saraswati who uphold the teachings of the Vedas.

Our Forefathers were brought here (in Mauritius) from India under dire circumstances and were cut off from their mainland. They were lured to obtain gold just by overturning stones from the land of Mauritius ! They were treated as were beasts- and had only a number as their identity. Their "Colonial Masters" looked down upon them and considered them as part of the rejected lot of Mauritian Society and were known as **"Coolies" / Malbar Coolies / Indian Immigrants / Indentured Labourers.** In spite of the harsh treatment meted out to them by the "Colons"(their masters) they had to cow into submission for their daily bread after toiling tooth and nail the whole day. Labouring the stony land, bushes, shrubs and dense forests covering the island. They had no respite from sunrise to sunset. The **Satyarth Prakash / Light of Truth** brought to Mauritius at the dawn of the 20th century by one known as Bholanath Tiwari, virtually argured the path to enlightenment of the Asian Community in Mauritius.

Mauritius has hugely and immensely benefitted from the precious and noble teachings of the Satyarth Prakash. The Arya Samaj instilled people to stand for their rights and might, and was eventually a key palyer in the immense and powerful struggle for Independance. The Satyarth Prakash strongly advocates that the very teachings and preachings of the Vedas are universal and pertain to sound spirituality. The Vedic teachings are not limited to the rituals of religion. There are no stories, biographies, history and prophecy in the Vedic hymns. Sectarianism and other man-made divisions are anti-Vedic. The Vedas are divine/spiritual and material knowledge conveyed to us through great seers and sages of several generations. Today's world is full of Swamis calling themselves as "Bhagwans", and who strive to assert themselves as mere GOD(S) or AVATARS. Maharshi Dayanand Saraswati never proclaimed himself as a new Messiah or pontiff nor created any new religion. He was indeed a great SOUL who had come to save humanity from the strong tentacles and shackles of conventions, superstitions and false beliefs.

CONCLUDING REMARKS

Ultimately, Swamiji – made an attempt to convene a Conference of religious heads to evolve a system of beliefs entirely based on Truth and desired to remodel the world so as to make it a better palce to live in.

Free from all rifts, conflicts and confrontations, religious and otherwise. Swamiji in the Satyarth Prakash also spelt out how Vedic Dharma is the sole spiritual nucleus that satisfies the pre-eminent needs of the hour.

Swami Dayanand's major, immortal and spiritual realization of "Satyarth Prakash" has been the very source through which we have been able to spread, promote, propagate and promulgate the Vedic ideology in all parts of the world including Mauritius and the Arya Samaj Movement has been so far quite successful and is still growing strong. In this broad context, it's also proper to mention that the Aryan brothers and sisters who have strongly and boldly adopted the good principles of Arya Samaj have also provided a huge source of inspiration to others and this monumental work will surely weave the entire world into a huge and virtual entity. Thus, it goes without saying that Maharshi Dayanand's concepts/ideas regarding truth have been immensely and substantially helpful in shaping our life's destiny and same have also considerably helped us to maintain our force and fortitude in this world of suffering, toil, tension, pretention and sensation.

In the wake of the afore-mentioned concrete facts, it is evident, without the least shadow of doubt that the SATYARTH PRAKASH / LIGHT OF TRUTH is a precious book of undying universal values.

ARYODAYE
Arya Sabha Mauritius
1,Maharshi Dayanand St., Port Louis,
Tel : 212-2730, 208-7504, Fax : 210-3778,
Email : aryamu@intnet.mu,
www.aryasabhamauritius.mu
प्रधान सम्पादक : डॉ० उदय नारायण गंगू,
पी.एच.डी., ओ.एस.के., आर्य रत्न
सह सम्पादक : श्री सत्यदेव प्रीतम,
बी.ए.,ओ.एस.के,सी.एस.के.,आर्य रत्न
सम्पादक मण्डल :
(१) डॉ० जयचन्द लालबिहारी, *पी.एच.डी*
(२) श्री बालचन्द तानाकूर, *पी.एम.एस.एम, आर्य रत्न*
(३) श्री नरेन्द्र घूरा, *पी.एम.एस.एम*
Printer : FAMOUS PRINTING CO. LTD
Royal Road, Calebasses, Pamplemousses
Tel : 243-1025, Fax : 243-8576

सत्यार्थप्रकाश जयन्ती संदर्भे।

पंडित माणिकचन्द बुद्धु, आर्य भूषण

भूमिका वचनामृत

आधार – वेदादि-विविध – सत्य-शास्त्र-प्रमाण-समन्वित ।
लेख का प्रयोजन : सत्य-सत्य अर्थ का प्रकाश करना ।

प्रश्न (१) सत्य क्या है ?
उत्तर - जो पदार्थ जैसा है, उसको वैसा ही कहना, लिखना और मानना सत्य कहलाता है।

प्रश्न (२) आप्त पुरुषों और विद्वानों का दायित्व क्या है ?
उत्तर - अपने उपदेशों और लेखों के द्वारा मनुष्यों के सामने 'सत्यासत्य' का स्वरूप समर्पित तथा प्रस्तुत करना। क्योंकि मनुष्य की आत्मा 'सत्यासत्य' को जानने वाली है।

प्रश्न (३) पक्षपाती मनुष्य कौन होता है?
उत्तर - जो अपने असत्य को सत्य और दूसरे विरोधी मतवाले के सत्य को असत्य सिद्ध करने में प्रवृत्त होता है ।

प्रश्न (४) विद्वानों के आपसी विरोध से क्या स्थिति पैदा होती है?
उत्तर - विद्वानों के विरोध से अविद्वानों में विरोध बढ़ता है । परिणामस्वरूप दुख की वृद्धि तथा सुख की हानि होती है। ऐसा करना स्वार्थी मनुष्यों का स्वभाव हैं ।

प्रश्न (५) सत्यार्थप्रकाश का अर्थात् वेद का 'सर्वतन्त्र सिद्धान्त' क्या है ?
उत्तर - जो जो बातें सब के अनुकूल सब में सत्य हैं, उनका ग्रहण और जो एक दूसरे से विरुद्ध बातें हैं, उनका त्याग कर परस्पर पर प्रीति से भेंट-वर्तावें – सो जगत् का पूर्ण हित होवे ।

प्रश्न (६) सत्य का रस कैसा है ?
उत्तर - भगवान् श्री कृष्ण जी महाराज का अमर वचन गीता (१८/३७) में —

यत्तदग्रे विषमिव परिणामेऽमृतोपमम् ।
तत्सुखं सात्त्विकं प्रोक्तं आत्म बुद्धि प्रमादजम् ।।

That which is like poison at first but like nectar at the end, that happiness is said to be sattvika, born of translucence (पारमासकता) of Intellect due to Self- Realisation.

प्रश्न (७) मन्तव्य-अमन्तव्य क्या है ?
उत्तर - वेदोक्त बातें स्वीकार्य हैं, मन्तव्य हैं।
और वेद विरुद्ध बातें अस्वीकार्य, व्यक्तव्य हैं अर्थात् अमन्तव्य हैं ।

प्रश्न (८) वाक्यार्थ बोध (सत्यार्थ बोध) के चार कारणाधार क्या हैं ?
उत्तर - (१) *आकांक्षा* - वक्ता और वाक्यस्थ पदों का आकांक्षा परस्पर होती है ।
(२) *योग्यता* - जिससे जो-जो हो सके।
उदाहरण - जैसे जल से सींचना।
(३) *आसत्ति* - जिस पद के साथ जिसका सम्बन्ध हो, उसके समीप उस पद को बोलना या लिखना ।
(४) *तात्पर्य* - जिसके लिए वक्ता ने शब्द कहा अथवा लेख लिखा, उसी के साथ उसे युक्त करना।

प्रश्न (९) सत्य का परिणाम क्या होता है ?
उत्तर - **सत्यमेव जयते नानृतम्। सत्येन पन्था विततो देवयाना ।**

अर्थात् सत्य की विजय होती है। असत्य की नहीं, सत्य से ही विद्वानों का मार्ग प्रशस्त होता है।

आर्य समाज का तीसरा नियम ध्यानस्थ हो – *सत्य के ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए।*

Football Tournament – DAV College Morc. St. Andre

The Sports Club of the DAV College Morc. St. Andre organized a football tournament for Prevocational, Form 1, Form 2 and Form 3 students during the first term. Mr P. Jaynut was the Officer in Charge for the event. The objective of the tournament was to provide a platform for students to practice the game they like a lot that is football. The tournament registered a massive participation of students. 16 teams took part in the competition and the matches were played during recess time on a knock-out system.

The final was played on 3rd April 2015 between Form 3 Saphire and Form 3 Topaz. Form 3 Saphire became champion by winning the match by 4-0. The award of medals was done by the Rector and Deputy Rector.

The Sports Club wish to thank the School Management Team for giving permission to organize the tournament, the PTA for sponsoring the medals and members of teaching and non-teaching staff for their collaboration.